ALLAHABAD MUSEUM

At a Glance

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

इलाहाबाद संग्रहालय
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
Allahabad Museum
(Ministry of Culture, Government of India)

संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE
सत्यमेव जयते

इलाहाबाद संग्रहालय
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
Allahabad Museum
(Ministry of Culture, Government of India)

टिकट शुल्क

1. बच्चे		
भारतीय		
(अ) 08 वर्ष तक		निःशुल्क
(ब) 9–18 वर्ष तक		रु 20/–
(स) 12वीं तक के विद्यार्थी		निःशुल्क
(स्कूल ड्रेस में अथवा परिचय-पत्र दिखाने पर)		
(अधिकतम 5 शिक्षकों के साथ)		
विदेशी		रु. 200/–
2. वयस्क		
(अ) भारतीय		रु. 50 /–
(ब) विदेशी		रु. 500/–
3. दिव्यांग		निःशुल्क

भ्रमण हेतु दिन एवं निर्धारित समय

- कार्य दिवस – मंगलवार से रविवार
- समय
  (1) दर्शकों हेतु पूर्वाह्न 10:30 से सायं 6:00 बजे।
  (2) टिकट विक्रय हेतु पूर्वाह्न 10:30 से सायं 5:30 बजे।
- अवकाश * राजपत्रित अवकाश एवं माह के दूसरे शनिवार के बाद के रविवार को पूर्ण अवकाश
  ** भ्रमण की पूर्व सूचना पर निःशुल्क प्रदर्शक (गाइड) की सुविधा

E-mail: allahabadmuseum@rediffmail.com
Ph. : 0532-2408237, 2407409, 2408690
Website : theallahabadmuseum.com
Twitter : @allahabadmuseum

प्रकाशन वर्ष : 2024
निदेशक, इलाहाबाद संग्रहालय
© प्रकाशक : प्रकाशन अनुभाग, इलाहाबाद संग्रहालय, प्रयागराज
मुद्रक : राज ग्राफ़िक्स, विश्वविद्यालय मार्ग, प्रयागराज

इलाहाबाद संग्रहालय : एक दृष्टि

सन 1863 में राजस्व परिषद द्वारा उत्तर पश्चिम प्रान्त की सरकार से पब्लिक लाइब्रेरी और एक संग्रहालय की स्थापना हेतु निवेदन किया गया। प्रान्तीय सरकार के अनुदान से प्रसिद्ध पुरालेख शास्त्री सर विलियम म्योर और महाराजा विजय नगरम को अधीक्षक, पुस्तकालय एवं संग्रहालय के रूप में नियुक्त किया गया तथा 1878 ई. में आरनेट भवन को उद्घाटित कर एकत्रित संग्रह को रखा गया। 1881 ई. में अपरिहार्य कारणों से संग्रहालय बंद हो गया। 1923-24 ई. में पं. जवाहर लाल नेहरू, अध्यक्ष, इलाहाबाद म्युनिसिपल बोर्ड द्वारा संग्रहालय को पुनः खोलने का उपक्रम बोर्ड के तत्कालीन कार्यकारी अधिकारी पं. बृजमोहन व्यास के निर्देशनों के अधीन प्रारम्भ हुआ और 1931 में म्युनिसिपल भवन में संग्रहालय खुला। पं. व्यास के अथक प्रयत्नों से संग्रहालय के लिए महत्वपूर्ण संग्रहों का अधिग्रहण हुआ जिसमें भरहुत और भूमरा, जनपद सतना, म. प्र. का प्राचीन मूर्ति शिल्प है। 1942 ई. में एस.सी. काला, इलाहाबाद संग्रहालय के प्रथम क्यूरेटर ने संग्रहालय के संग्रहों की समृद्धि के लिए आवश्यक प्रयास किये जिसमें मुख्यतः नेहरू जी के व्यक्तिगत संग्रह और बंगाल कथा केंद्र के चित्र उल्लेखनीय हैं। स्थानाभाव के कारण यह निर्णय हुआ कि संग्रहालय को म्यूनिसिपल बोर्ड के भवन से कम्पनी बाग अथवा चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क के वर्तमान भवन में स्थानान्तरित कर देना चाहिए। वर्तमान संग्रहालय भवन जिसे इलाहाबाद संग्रहालय कहा जाता है, उसकी आधार शिला 14 दिसम्बर 1947 को पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा रखी गई और 1954 में संग्रहालय जनसामान्य के लिए खोल दिया गया। कलाकृतियों के महत्वपूर्ण संग्रह को देखते हुए सितम्बर 1985 में संस्कृति विभाग, भारत सरकार द्वारा यह राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित की गई। संग्रहालय की गतिविधियों को शासित करने हेतु समिति पंजीकरण अधिनियम 1960 के अन्तर्गत 6 सितम्बर 1985 को समिति अस्तित्त्व में आयी। यह पूर्णतः भारत सरकार द्वारा सरकार द्वारा वित्तपोषित है। सन 2008 से राज्यपाल, उ.प्र. इलाहाबाद संग्रहालय समिति के पदेन अध्यक्ष हैं। संग्रहालय में 16 वीथिकाएं हैं जिसमें विविध प्रकार के संग्रह है यथा मूर्तिशिल्प, मृण्मूर्ति, लघुचित्र कला, आधुनिक चित्र कला, पुरातात्विक वस्तु, मुद्राएं, अस्त्र औरशस्त्र, वस्त्र, पाण्डुलिपि तथा फरमान आदि उल्लेखनीय है। मूर्ति कला संग्रह में अशोक स्तम्भ शीर्ष (तीसरी शती ई. पूर्व) 58 भरहुत स्तूप के (दूसरी शती ई. पूर्व) कला शिल्प जिसमें जातक कथाओ के दृश्य है, स्तम्भ, बड़ेर, तोरण प्राचीन प्रस्तर कला शिल्प वीथिका में प्रदर्शित है। मध्य कालीन मूर्ति वीथिका में वैष्णव, शाक्त, शैव तथा जैन मूर्तियां सुन्दर एवं व्यवस्थित ढंग से प्रदर्शित हैं। यहाँ लघु चित्र कला एवं आधुनिक चित्र कला का समृद्धि संग्रह है। लघु चित्रकला में राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल और कम्पनी स्कूल के चित्र हैं। आधुनिक चित्रकला में अनागरिक गोविन्द और रूसी चित्रकार निकोलस और स्वेतोश्राव रोरिक का महत्वपूर्ण स्थान है। बंगाल स्कूल संग्रह में असित कुमार हल्दार, अवनिंद्र नाथ टैगोर, गगनेन्द्र नाथ टैगोर, नन्दलाल बोस, जामिनी राय और सुधीर रंजन खस्तगीर के कृतियों का इलाहाबाद संग्रहालय में अमूल्य संग्रह हैं। संग्रहालय में सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, मैथलीशरण गुप्त, रामकुमार वर्मा आदि साहित्यकारों की पाण्डुलिपियां एवं व्यक्तिगत पत्रों का महत्वपूर्ण संग्रह है। इलाहाबाद संग्रहालय के अस्त्र शस्त्र संग्रह में दुर्लभ पिस्तौलें, राइफल, बन्दूकें, तलवारें तथा 18 वीं-19 वीं शती के कवच हैं। वस्त्र एवं साज-सज्जा संग्रह में सोने की जरी का काम और काष्ठ कला कृतियां उल्लेखनीय है। संग्रहालय भ्रमण करने वाले बच्चों के लिये यहां एक प्राकृतिक इतिहास विभाग भी है।

Allahabad Museum at a Glance

The inception of Allahabad Museum in 1863 began with the Board of Revenue's request to the Government of North- Western Provinces for the establishment of a public library and a museum. With donations from the provincial government, the famous Orientalist Sir William Muir and the Maharaja of Vijaynagaram, a superintendent of library & museum was appointed and an ornate building was inaugurated in 1878 to house the collection. For unforeseen reasons the museum closed down in 1881. The initiative to set up a new museum in Allahabad was taken by Pandit Jawaharlal Nehru, in 1923-24 under the operational direction of Pandit Brij Mohan Vyas, the then Executive Officer of the board. The museum was opened in the Municipal Building Allahabad in 1931. Under the tutelage of Mr. Vyas, the museum acquired important collections, including ancient sculptures from Bharhut and Bhumra, Satna district of Madhya Pradesh. In 1942, S.C. Kala, the first Curator of Allahabad Museum gave the much needed impetus to enrich the collections of the museum, especially adding The Personalia Collection and the Bengal School Paintings. As space became a constraint, it was decided that the museum should be shifted from the Municipal Board building to the present building in the Chandrasekhar Azad Park. The foundation stone of the present museum building was laid on 14th December 1947 by Pandit Jawaharlal Nehru and the museum was opened to the public in 1954. Seeing the significance of its collections of art and antiquities, it was declared an Institution of National Importance by the Government of India, Department of Culture in September 1985. A 'Society' came into being under the Registration of Societies Act, 1860, on 6th September 1985, to administer the activities of the Museum and thus the Allahabad Museum became an autonomous body under the Ministry of Culture, Government of India. At present, it is fully funded by the Government of India. Since 2008 Hon'ble Governor of Uttar Pradesh has been ex-officio Chairman of the Allahabad Museum Society.

There are sixteen galleries in the Allahabad Museum. It houses a variety of collections which include Stone Sculptures, Terracottas, Miniature Paintings, Modern Paintings, Archaeological objects, Coins, Arms and Armour, Textile, Manuscripts, Farmans etc. The collection also includes archaeological artifacts and exquisite art objects from different parts of the country.

The sculptural art collection comprising of an abacus of an Ashokan pillar (3rd century BCE), fifty-eight fragments of sculpture from the Bharhut stupa (2nd century BCE) including scenes from the Jataka stories, pillars, crossbars and coping stones are displayed in the Early Sculpture Gallery. The Medieval sculpture section is still more attractive and varied, displaying the Vaishnava, Shatka, Shiva and Jain images. The Museum also has a rich collection of Miniature Paintings and Modern Painting. The Miniature Paintings belong to the Rajasthani, Pahari, Mughal and Company schools of paintings. Paintings of Anagarika Govinda and those of the Russian artists Nicholas and Svetoslav Roerich occupy a pride of place in the Modern Art Gallery. The Bengal School collection comprises the works of Asit Kumar Haldar, Abanindra Nath Tagore, Gaganendra Nath Tagore, Nand Lal Bose, Jamini Roy and Sudhir Ranjan Khastgir amongs others. The Museum has an important personalia collection of manuscripts and letters of literary luminaries like Sumitranandan Pant, Mahadevi Verma, Suryakant Tripathi 'Nirala', Maithili Saran Gupta, Ram Kumar Verma and others. The Arms and Armour Collection of the Allahabad Museum has unique pistols, rifles, guns, swords and body armor from the 18th century to 19th century CE. The textiles and decorative arts collection includes fine gold Zari work and exquisite wooden artifacts. It also has a Natural History section for the children visiting the Allahabad Museum.

स्वतंत्रता संग्राम संग्रह

Freedom Struggle Collection

शहीद चंद्रशेखर आज़ाद की पिस्तौल
Pistol of Martyr Chandra Shekhar Azad

भारत के स्वतंत्रता संग्राम से सम्बन्धित वस्तुओं एवं चित्रो पर आधारित इलाहाबाद संग्रहालय की स्वतंत्रता संग्राम संग्रह मे 1857 के विद्रोह से लेकर भारत के स्वतंत्रता क्रांति तक कि चित्रों को देखा जा सकता है। इलाहाबाद संग्रहालय के स्वतंत्रता संग्राम संग्रह में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा सी. एफ. एण्ड्रयूज, कमल नारायण मालवीय तथा मुंशी ईश्वरीय शरण को लिखे गये पत्र तथा टेलीग्राम महत्वपूर्ण है। इस संग्रह का एक महत्वपूर्ण आकर्षण स्वीडन, ऑस्ट्रिया, जापान जैसे देशो में छपे माचिस के लेबल हैं, जिन पर पौराणिक कथाओं तथा भारतीय देवी-देवताओं का अंकन मिलता है। इनके अतिरिक्त वीर सावरकर, अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद तथा शहीद ठाकुर रोशन सिंह द्वारा अपने भाई को लिखे गये पत्र की प्रतिकृति भी महत्वपूर्ण दर्शनीय सामग्रियां हैं। स्वतंत्रता संग्राम मे प्रमुखता से योगदान देने वाले बहादुर शाह जफर, नाना साहेब पेश्वा, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, बेगम हजरत महल, राजा राम मोहन राय, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा ज्योतिबा फूले, खुदीराम बोस, सरदार उधम सिंह, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिंह, अमर शहीद चन्द्रशेखर आज़ाद, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरु तथा लाल बहादुर शास्त्री जैसे राष्ट्र प्रेमियों के चित्र भी स्वतंत्रता संग्राम संग्रह के प्रमुख भाग हैं।

Pictures from the rebellion of 1857 to India's independence revolution can be seen in the freedom struggle collection of the Allahabad Museum. Letters and telegrams written by Father of the Nation Mahatma Gandhi to C.F. Andrews, Kamal Narayan Malaviya and Munshi Ishwariya Sharan are important in the Freedom Struggle collection of Allahabad Museum. An important attraction of this collection are the matchstick labels printed in countries like Sweden, Austria, Japan, on which mythological and Indian gods and goddesses are depicted.

Apart from these, the replication of the letter written by Veer Savarkar, Amar Shaheed Chandrashekhar Azad and Shaheed Thakur Roshan Singh to his brother are also important displayed materials. Pictures of patriots, who contributed prominently in the freedom struggle like Bahadur Shah Zafar, Nana Saheb Peshwa, Rani Lakshmi Bai of Jhansi, Begum Hazrat Mahal, Raja Ram Mohan Roy, Lokmanya Bal Gangadhar Tilak, Mahatma Jyotiba Phule, Khudiram Bose, Sardar Udham Singh, Lala Lajpat Rai, Sardar Bhagat Singh, Amar Shaheed Chandrashekhar Azad, Netaji Subhash Chandra Bose, Mahatma Gandhi, Pandit Jawahar Lal Nehru and Lal Bahadur Shastri are also prominent part of the Freedom Struggle Collection.

गाँधी स्मृति वाहन
Gandhi Memorial Vehicle

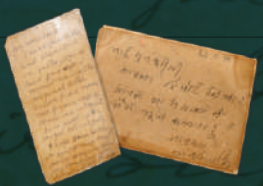

गाँधी जी द्वारा लिखित पत्र
Letter written by Gandhi ji

आधुनिक चित्रकला संग्रह

MODERN PAINTING COLLECTION

सांवरी
Saanvari

कर्ण की मृत्यु
Death of Karna

Modern painting collection is one of the most important collection of the Allahabad Museum. In 1937, internationally renowned artist Nicholas Roerich donated 19 of his paintings which are displayed in the modern painting gallery of the Museum. Later, his son Svetoslav Roerich also donated two of his paintings to enrich this collection. Abanindranath Tagore, Gaganendranath Tagore, Nand Lal Bose, S.N. Mishra, Shakti Verma, Manish Dey, Vireshwar Sen, L.M Sen, B.N.Arya, K.N. Majumdar A.K. Haldar, S.R. Khastgir and several other important painters such as S.N Dey, Bhikshu Anagarik Govind, Jamini Roy, A.R. Chugtai, D.P. Dhulia, P. Perumal, A.C.Vasudev, Ram Gopal Vijayvargiya, R.N Dev, Mahadevi Verma also gifted their collection of paintings to Allahabad Museum.

लम्बे काले केश वाली महिला
Lady having long black hair

होली शेफर्ड
Holy Shepherd

आधुनिक चित्रकला संग्रह, इलाहाबाद संग्रहालय का एक महत्वपूर्ण संग्रह है। सन् 1937 में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार निकोलस रोरिक ने अपनी 19 कृतियाँ संग्रहालय को भेंट की जो आधुनिक चित्रकला वीथिका में प्रदर्शित है। बाद में उनके सुपुत्र स्वेतोस्लाव रोरिक ने भी संग्रह की समृद्धि हेतु अपनी दो कृति प्रदान की। अबनिन्द्रनाथ टैगोर, गगनेन्द्रनाथ टैगोर, नन्दलाल बोस, एस.एन. मिश्र, शक्ति वर्मा, मनीष डे, वीरेश्वर सेन, एल. एम. सेन, बी. एन. आर्या, के.एन. मजूमदार, ए.के. हलदार, एस.आर. खस्तगीर के साथ ही अन्य महत्वपूर्ण चित्रकार एस.एन. डे, भिक्षु अनागारिक गोविन्द, जामीनी रॉय, ए.आर. चुगताई, डी.पी. धूलिया, पी. पेरुमल, ए.सी. वासुदेव, राम गोपाल विजय वर्गीय, आर.एन. देव, महादेवी वर्मा ने भी अपने चित्रों के संग्रह इलाहाबाद संग्रहालय को भेंट किया।

पाण्डुलिपि संग्रह
MANUSCRIPT COLLECTION

इलाहाबाद संग्रहालय में लगभग 6000 पाण्डुलिपि सुरक्षित हैं। ये पाण्डुलिपि लगभग 200 साल पुरानी हैं तथा इनकी भाषा हिन्दी एवम् संस्कृत है । पाण्डुलिपि मूलतः हाथ से लिखी हुई पुस्तक को कहा जाता है। ये पाण्डुलिपि पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, कर्मकाण्ड, व्रतकथा एवं दैनिक पूजा पद्धति से सम्बन्धित हैं।

इसके अतिरिक्त ताडपत्र पर उकेरी गयी सचित्र गीत गोविन्द विशेष रूप से उल्लेखनीय है । हिन्दी देवनागरी में ब्रजविलास, सुन्दरकवि का सुन्दर सिंगार भी सुन्दर चित्रों से सम्वलित उल्लेखनीय पाण्डुलिपि हैं। ऐतिहासिक ग्रन्थ शाहनामा एवं भक्ति ग्रंथों में आध्यात्म रामायण, राधाविनोदकाव्यम्, रुक्मिणीमंगल, रामचरितमानस आदि का नाम महत्वपूर्ण है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि ये पाण्डुलिपि अधिकांशतः खण्डित हैं

About 6000 manuscripts are preserved in the Allahabad Museum. These manuscripts are about two hundred years old and their language is Hindi and Sanskrit. Manuscript is basically a book written by hand. These manuscripts are basically related to Puranas, Jyotish, Ayurveda, rituals, fast stories and daily rituals.

Apart from this, the illustrated Gita Govinda, which are engraved and painted on palm leaves, are particularly noteworthy. Brajvilas in Hindi Devanagari, Sundar Kavi's Sundar Singaar are also notable manuscripts illustrated with beautiful paintings. In devotional texts, the name of Adhyatma Ramayana, Radhavinodkavyam, Rukminimangal, Ramcharitmanas etc. and in historical texts, the name of Shahnama is important. It is also worth mentioning here that these manuscripts are mostly fragmented.

फरमान संग्रह FARMANS COLLECTION

ऐतिहासिक दृष्टि से फरमान अपने समय के सबसे प्रामाणिक स्रोत हैं। ये मूलतः मध्यकाल में बादशाहों, सुल्तानों एवं जमीदारों के आदेश होते थे जो समय समय पर पुरस्कार, प्रसन्नता, सहायता के रूप में अधीनस्थों अथवा प्रजाजनों को प्रदान किये जाते थे।इलाहाबाद संग्रहालय में 500 से अधिक फरमान संग्रहीत हैं। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक होगा कि फरमान सल्तनत के सुल्तानों की राजाज्ञाओ को कहा जाता है शेष आदेश अथवा आज्ञा होते हैं, जिन्हें परवाना, डिक्री, वारिसनामा, अलतमगा कहा जाता है । संग्रहालय में फरमान के रूप में जो कुछ संग्रहीत है वह भू-दान, मदद - ए - माश, ख़त, डिक्री, सुक्का, माफ़िग्राण्ट, तकसीमनामा के रूप में संरक्षित है। इनमें अकबर, शाहजहां, औरंगजेब के फरमानों की प्रतियाँ तथा रियासतों के ज़मींदारों द्वारा प्रदान की गयी सहायताओं की प्रतियाँ भी हैं

Historically, farman or decrees are the most authentic sources of their time. These were basically orders of emperors, sultans and zamindars in medieval times, which were given from time to time to subordinates or subjects in the form of rewards, happiness or help.

More than 500 decrees are stored in the Allahabad Museum. It will also be necessary to make it clear here that the farmans are called the decrees of the Sultans of the Sultanate. The rest are orders or permissions which are called Parwana, Decree, Warisnama, Altamga. Whatever is preserved in the form of Farman in the museum is Land grants, Madad-e-mash, Khat, Decree, Sukkah, Mafigrant, Taksimnama. Among them are copies of the decrees of Akbar, Shah Jahan, Aurangzeb and the aids provided by the landlords of the princely states.

शाहनामा
Shah-Nama

चित्रित गीता
Illustrated Gita

आलमशीर औरंगज़ेब का फरमान
Farman of Alamgir Aurangzeb

साहित्यिक संग्रह

LITERARY COLLECTION

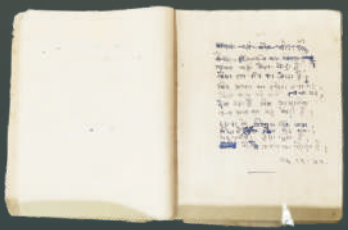

श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी की हस्तलिखित कविता
Handwritten Poem by Shri Suryakant Tripathi 'Nirala' ji

इलाहाबाद संग्रहालय के साहित्यिक संग्रह पर आधारित साहित्यिक वीथिका हिन्दी साहित्य के रचनाकारों को समर्पित देश की एकमात्र वीथी है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस वीथिका की स्थापना छायावादी कवि पं. सुमित्रानंदन पंत ने अपने व्यक्तिगत संग्रह को संग्रहालय को देकर कराया था। साहित्यिक संग्रह में महाप्राण पं. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महीयसी महादेवी वर्मा, कथासम्राट मुंशी प्रेमचन्द, डा. रामकुमार वर्मा एवं श्रीयुत श्रीनरेश मेहता की व्यक्तिगत सामग्री एवं पाण्डुलिपियां हैं।

उल्लेखनीय है कि इलाहाबाद सम्प्रति प्रयागराज हिन्दी आन्दोलन एवं रचनाकारों की साहित्यिक राजधानी रहा है। सुविदित है कि छायावाद और छायावादोत्तर हिन्दी साहित्य का शायद ही कोई रचनाकार रहा हो जो इलाहाबाद के रास्ते न गुजरा हो।

Literary collection based gallery of the Allahabad Museum is the only gallery in the country dedicated to the writers of Hindi literature. This gallery was established by the eminent Chhayawadi poet Pt. Sumitranandan Pant by giving his personal collection to the museum. Literary collection has material and manuscripts of Mahapran Pt. Suryakant Tripathi 'Nirala', Mahiyasi Mahadevi Verma, Kathasamrat Munshi Premchand, Dr. Ramkumar Verma and Sriyut Shrinaresh Mehta.

It is noteworthy that Allahabad now Prayagraj has been the literary capital of Hindi movement and writers. It is well known that hardly any writer of chhayavad and postchhayavad Hindi literature who has not passed through Allahabad.

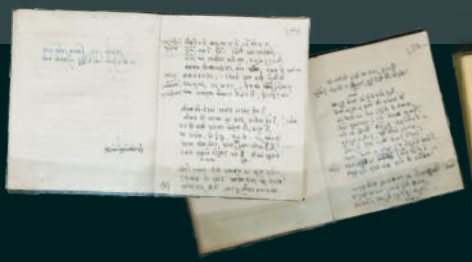

श्री सुमित्रानन्दन पन्त जी की हस्तलिखित कविता
Handwritten Poem by Shri Sumitranandan Pant ji

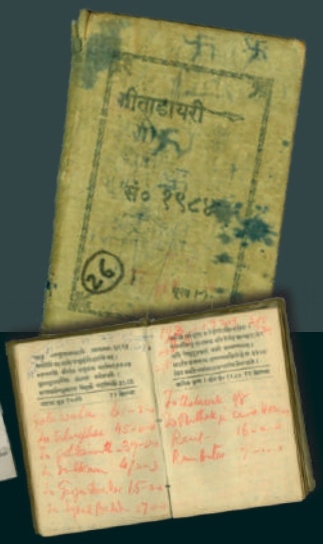

प्रेमचन्द की डायरी
Diary of Premchand

थंका संग्रह THANGKA COLLECTION

धृतराष्ट्र (लोकपाल)
Dhritrastra (Lokpal)

About 132 Thangka paintings are stored in the reserve collection of the Allahabad Museum. These thangka were received by the Allahabad Museum from eminent scholar Dr. Raghuveer. The Thangka paintings are basically associated with Buddhist worship and Buddhist deities.

The word thangka basically signifies mobility, which means such pictures which can be easily carried from one place to another place for worship. These paintings made on cloth are influenced by the Buddha and originally from the Buddhist Vajrayana Tantra, in which the names of goddesses like Green Tara, Shyam Tara, Yamari and Lokpals like Vajraveg, Vajrasattva, Vaishravana Amitesh, Amitabha, Chaturbhuj Avalokiteshvara and Dhritarashtra are important.

इलाहाबाद संग्रहालय के सुरक्षित संग्रह में लगभग 132 थंका चित्र संग्रहीत हैं। ये थंका सुप्रसिद्ध विद्वान डा0 रघुवीर द्वारा इलाहाबाद संग्रहालय को प्राप्त हुए थे। थंका चित्र मूलतः बौद्ध पूजा पद्धति एवं बौद्ध देवी-देवताओं से सम्पृत्य हैं। थंका शब्द मूलतः गतिशीलता का प्रतीक है, जिसका अर्थ ऐसे चित्रों से है जिन्हेंपूजार्थ एक स्थान से दूसरे स्थान पर सुगमता से ले जाया जा सकता है। कपड़े पर निर्मित ये चित्र बुद्ध एवं मौलिक रूप से बौद्ध वज्रयानतन्त्र से प्रभावित हैं, जिनमें ग्रीन तारा, श्याम तारा, यामरी जैसी देवियां तथा वज्रवेग, वज्रसत्व, वैश्रवन, अमितेश, अमिताभ, चतुर्भुज अवलोकितेश्वर तथा धृतराष्ट्र जैसे लोकपालों के नाम महत्त्वपूर्ण है।

जम्भाला
Jambhala

उष्णीषविजय
Ushnishavijaya

मृण्मूर्ति संग्रह

Terracotta Collection

इलाहाबाद संग्रहालय में मृण्मूर्तियों का एक विशाल संग्रह है जिनमें प्राकमौर्य, शुंग, कुषाण तथा गुप्त काल की लगभग 6,000 मृण्मूर्तियां शोधार्थियों एवं दर्शको के आकर्षण का केन्द्र हैं। ये मृण्मूर्तियां कौशाम्बी, झूसी, भीटा, राजघाट (वाराणसी), कन्नौज, संकिसा, मथुरा तथा अहिच्छत्र जैसे ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त हुई हैं, जिनके अध्ययन से हमे स्थान विशेष की तत्कालीन कला, संस्कृति का परिचय मिलता है।

शुंगकालीन मृण्मूर्तियों में लक्ष्मी, गजलक्ष्मी, भूदेवी, रथारुढ़ राजा, विविध प्रकार के रथ, श्रृगांरपरक चित्रण, ऐतिहासिक चित्रण (वत्सराज उदयन द्वारा राजकुमारी वासवदत्ता के हरण का फलक), पौराणिक आख्यान (रावण द्वारा सीता हरण का फलक), दैनिक जीवन तथा मनोरंजन यात्राओं के दृश्य उल्लेखनीय हैं।

मृण्मूर्ति संग्रह से सम्बन्धित वीथिका में कुषाण कालीन शल्य क्रिया से सम्बन्धित एक मानव शरीर को प्रदर्शित किया गया हैं, जिसमें मानव शरीर के आमाशय वाले भाग की शल्य क्रिया को दर्शाया गया है। यह मृण्मूर्ति कला की दृष्टि से स्वयं में एक अकेली एवं अनूठी कृति हैं।

गुप्तकालीन मृण्मूर्ति कला के आकर्षक उदाहरणों में कालिदास के काव्य में वर्णित नायिका सदृश शालभंजिका, प्रलम्बवध से सम्बन्धित मृणफलक तथा वीणावादन का चित्रण महत्वपूर्ण है।

The Allahabad Museum has a huge collection of terracotta, in which about 6,000 terracotta figurines of Premaurayan, Shunga, Kushan and Gupta periods are the center of attraction for researchers and visitors. These terracotta figurines have been obtained from historical places like Kaushambi, Jhunsi, Bhita, Rajghat (Varanasi), Kannauj, Sankisa, Mathura and Ahichhatra, whose study gives us an introduction to the contemporary art and culture of that particular place.

Shunga period terracottas include Lakshmi, Gajalakshmi, Bhudevi, Ratharudha king, various types of chariots, decorative depictions, historical depictions (Plaque of elopement of princess Vasavadutta by Vatsaraja Udayan), mythological narratives (Plaque of abduction of Sita by Ravana), daily life and entertainment tours visuals are noteworthy.

The Allahabad Museum has a huge collection of terracotta, in which about 6,000 terracotta figurines of Premaurayan, Shunga, Kushan and Gupta periods are the center of attraction for researchers and visitors. These terracotta figurines have been obtained from historical places like Kaushambi, Jhunsi, Bhita, Rajghat (Varanasi), Kannauj, Sankisa, Mathura and Ahichhatra, whose study gives us an introduction to the contemporary art and culture of that particular place.

खिलौना गाड़ी
Toy cart

पंचचूड़ा
Panchchooda

ड्रमर
Drummer

प्राकृतिक इतिहास संग्रह
NATURAL HISTORY COLLECTION

हिमालय रेड पांडा
Himalayan Red Ailurus fulgens

चितरौल
Pine Martin Martes martes

यह इलाहाबाद संग्रहालय की प्राचीनतम संग्रह है। इस गैलरी की विशिष्टता इस तथ्य में निहित है कि इसमें एक विशाल संग्रह के अलावा कुछ पशुओं के दुर्लभ नमूने भी हैं। जिनमें कुछ तो प्लास्टोसिन काल से ही अस्तित्व में थे जैसे- रायल बंगाल टाइगर।

गैलरी में पक्षी वर्ग और स्तनपायी वर्ग के 78 नमूने हैं जो दो कमरों तक सीमित हैं, उपरोक्त सभी नमूने किंगडम एनीमेलिया, फाइलम कॉर्डेटा, क्लास पक्षी वर्ग या स्तनधारियों के हैं, 78 नमूनों में से 68 नमूने पक्षी हैं। इनमें से कुछ विशेष आकर्षक हैं जैसे छोटे आकार के पक्षी जैसे- गौरैया, छोटा मिनीवेट। (राजलाल)। मध्यम पक्षी जैसे- किलकिला आम परिया चील (चील) वैज्ञानिक नाम मिलवस माइग्रन्स, बैरोन उल्लू, कौआ आदि। बड़े आकार के पक्षी- हार्न बिल, वेजटेल आदि। गाने वाले पक्षी - लिटराइन वार्बलर, ट्री पाई। पौराणिक पक्षी- रोजी पार्टनर (हामा) वैज्ञानिक नाम- सिट्टाकुला क्रामेरी, खेलने वाले पक्षी - कोकलास तीतर वैज्ञानिक नाम पी. मैक्रोलोफा। घोंसला बनाने वाले पक्षी जैसे-लैप विंग- ब्रेन फीवर पक्षी जैसे-कॉमन हॉक (पपिया)। लुप्तप्राय पक्षी या प्रवासी पक्षी जैसे- ब्लू जे- अमेरिका के मूल निवासी, ब्लैक हेडेड ऑरियोल, ग्रे टिट दक्षिण अफ्रीका के मूल निवास वैज्ञानिक नाम पारस आफर, ब्लैक हेडेड मुनिया (हामा)।

प्रीडेइस जैसे-फाल्कन विथ प्रे, वेज टेल, ग्रे टिट आदि इन पक्षियों की आबादी तेजी से घट रही है। जैसे- पैराडाइज फ्लाई कैचर। कुछ पक्षियों को असुरक्षित घोषित किया गया है जैसे कि शिकार के साथ बाज, भारतीय लाल बंदर, लाल पंखों वाला कौवा, रायल बंगाल टाइगर, तेंदुआ, हिरण, आदि और इनमें से कुछ तो प्न्च्छ की लुप्तप्राय सूची के पास हैं जैसे कि लाल पांडा, कॉमन पिजन, पैराडाइज फ्लाई कैचर। शेष दस प्रदर्श स्तनधारी वर्ग के हैं जैसे कि रायल बंगाल टाइगर, तेंदुआ, हिरण इत्यादि जिनमें सबसे छोटा प्रदर्श लाल बंदर (वर्ग स्तनधारी, आर्डर प्राइमेट परिवार सरकोपिथे साइडल, जीनस मकाका) का है। उपरोक्त 78 वस्तुओं में ही एक प्रदर्श शुतुरमुर्ग के अहे का है जिसके खोल का उपयोग- सजावटी कला के काम में तथा बर्तन के रूप में मनुष्यों द्वारा किया जाट रहा है। अंडे का औसत आकार 15 सेभी लंबा, 13 सेमी चैड़ा और 1.4 किलो का वजन है जो मुर्गी के अंडे से 20 गुना अधिक है।

This is the oldest collection of the Museum. The uniqueness of this gallery lies in the fact that few rare specimens besides a vast collection of specimen of other animals of birds and mammals that flourished in our country since Pleistocene period 12000-16500 years ago e.g. Bengal tiger.

The gallery consists of 78 specimens of Aves and Mammal confined to two rooms, All the above specimens belong to kingdom-Animalia, Phylum chordata, class-aves or mammals, Of the 78 specimens, 68 specimens are birds. Most interesting among them are as follows :-

Small sized birds - Sparrow, little minivet. (Rajlal), Medium sized birds - Kilkila common Pariah kite (cheel),Barron owl, crow etc., Large sized birds - Horn bill, Wegtail etc.,

Singing birds - Tree Pie, Mythical birds - Rosy Partner (Hama), Game bird - Koklas Pheasant- Scientific Name- *P. macrolopha*, Nesting birds- Lap wing, Brain fever bird - Common hawk (Papiya).

Endangered birds or Migratory birds - Blue Jay- Native of America, Black headed oriole, Grey Tit- Native of South Africa Scientific Name- Parus Afer ,black headed Munia (Hama).

Birds of Prey - Falcon with Prey weg tail grey etc.

Out of these, birds population of some of them are decreasing very fast such as Paradise fly Cather.

Some birds have been declared vulnerable such as falcon with Prey, Indian red monkey, crow having red feathers, literine warbler leopard, deer, tiger etc. and some of them are near the endangered list of IUCN such as Red Panda, common pigeon, Paradise, Fly catcher. Rest ten objects are mammals such as Royal Bengal Tiger, Leopard, Beer, deer etc among which the smaller specimen is that of red monkey belonging to the class Mammalia. Excluding all the above 78 objects marvelous piece i s that of Ostrich egg. The egg of ostrich is a largest of any living bird and it's shell is used by humans as a container as well as a material for decorative art work. Average Size of egg is 15 cm long (5.9 inches), 13 cm (5.1 inches) wide and weight 1.4 kg, over 20 times the weight of a chicken egg.

महालत
Tree Pie Dendrocitta formosae

पीली चिड़िया
Literine Warbler Setophaga petechia

हवासिल
Spotted Billed pelican Pelecanus philippensis

कांस्य संग्रह
BRONZE COLLECTION

सरौता
Nut Cutter

पाजेब
Anklet

इलाहाबाद संग्रहालय के कांस्य संग्रह में हिन्दू, बौद्ध तथा जैन धर्म से सम्बन्धित मूर्तियाँ प्रमुख हैं। लगभग 16वीं से 20वीं शताब्दी ई. की ये कांस्य निर्मित कलाकृतियां भारत के विविध क्षेत्रों से या तो उपहार स्वरुप अथवा इलाहाबाद संग्रहालय की क्रय समिति के नियमों के तहत खरीदी गयी हैं। इस संग्रह में धार्मिक प्रयोजनों के निमित्त निर्मित शिव, गणेश, विष्णु, नटराज आदि की मूर्तियां अपने उत्कृष्ट सौंदर्य तथा रचना विधान की दृष्टि से दर्शनीय हैं। इनके अतिरिक्त म्यांमार से प्राप्त घंटा, विविध प्रकार के सरौते, दीपदान, सिंहासन तथा खिलौना गाड़ी आदि भी इस संग्रह के महत्वपूर्ण आकर्षण हैं।

Statues related to Hindu, Buddhism and Jainism are prominent in the bronze collection of the Allahabad Museum. These bronze artefacts from around 16th to 20th century AD have been received from various regions of India either as gifts or under the rules of purchase committee of the Allahabad Museum. In this collection, the idols of Shiva, Ganesha, Vishnu, Nataraj etc. made for religious purposes are a major attraction from the point of view of their excellent beauty and composition. Apart from these, the bell received from Burma, different types of nut cutters, lamps, throne and toy carts are also important attractions of this collection.

बलराम
Balram

नृत्यरत शिव
Dancing Shiva

सिक्के का संग्रह
COLLECTION OF COINS

इलाहाबाद संग्रहालय के सुरक्षित संग्रह में पांचवी शताब्दी ईसा पूर्व से आधुनिक काल तक के सिक्कों का सुंदर संग्रह है। जिनमें प्राचीनतम ज्ञात सिक्के जो 'पंच मार्क' नाम से जाने जाते हैं ताम्र व कांस्य निर्मित हैं। इसके अतिरिक्त कुछ चाँदी के बने हिंद-यवन सिक्के 'मघ-मित्र' सातवाहन, कुषाण, गुप्त, गढ़वाल, पाल, किदार कुषाण, गधैया के साथ ही सल्तनत कालीन शासकों जैसे खिलजी, सूरी और बलबनक व पश्चात् कालीन मुगल शासकों के सिक्कों का बृहद संग्रह है।

कुषाण शासक विम कडफिसेस ने भारत में सर्वप्रथम स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन किया। इसके पश्चात गुप्तों ने कतिपय महत्वपूर्ण स्वर्ण सिक्कों की श्रृंखला निर्गत की जिसमें चन्द्रगुप्त प्रथम द्वारा वैशाली के लिच्छिवियों से वैवाहिक संबंध पर ऐतिहासिक स्मारक सिक्का व समुद्रगुप्त द्वारा जारी अश्वमेघ यज्ञ प्रकार का सिक्का विशेष हैं। उपरोक्त के अतिरिक्त मुगलों ने भी सुंदर स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन किया जिनमें अकबर का 'मेहराबी' व उसके पुत्र जहांगीर का 'जोडिक' प्रकार मुख्य हैं। इसी क्रम में शाहजहाँ ने भी सुंदर कैलीग्राफी से युक्त सिक्के जारी किए। कम्पनी शासन तथा ब्रिटिश क्राउन के अधीन शासन के अन्तर्गत चांदी, ताम्र व स्वर्ण निर्मित सिक्के संग्रहालय के महत्वपूर्ण संग्रह हैं।

The reserve collection of the Allahabad Museum has a beautiful collection of coins from the 5th century BC to the modern period in which the oldest coins are known as "punch marked" which are made of copper and bronze. Apart from this, there is also a large collection of some Indo-Yavan coins made of silver, 'Magha-Mitra' Satavahana, Kushan, Gupta, Garhwal, Pala, Kedar Kushan, Gaddhaiya as well as coins of Sultanate rulers like Khilji, Suri and Balban and later Mughal rulers.

Kushan ruler Vima Kadphises first introduced gold coins in India. After this, the Guptas issued a series of some important gold coins, in which Chandragupta I's historic commemorative coin on the matrimonial relationship with the Lichchavis of Vaishali and the Ashwamedha Yagya type coin issued by Samudra Gupta are important. In addition to the above, the Mughals also introduced beautiful gold coins, in which Akbar's 'Mehrabi' and his son Jahangir's 'Zodiac' type are the main ones. In this sequence, Shahjahan also issued coins containing beautiful calligraphy. The coins make up of copper, silver and gold made under the company rule and British Crown rule are important

समुद्रगुप्त कालीन सोने का सिक्का
Gold Coin of Samudragupta

ताम्र निर्मित आहत सिक्के
Punch Marked Copper Coins

अकबर का मेहराबी सिक्का
Mehrabi Coin of Akbar

ताम्र निर्मित आहत सिक्के
Punch Marked Copper Coins

साज-सज्जा संग्रह

DECORATIVE COLLECTION ART

बीदरी पात्र
Bidari Ware

इलाहाबाद संग्रहालय का साज-सज्जा संग्रह मुख्यतः काष्ठ, वस्त्र तथा विविध प्रकार के पात्रों का संग्रह है। काष्ठ निर्मित वस्तुओं में सहारनपुर का काष्ठ निर्मित पर्दा, मेज, दराज, संदूक, बाम्बे की काली लकड़ी से निर्मित सोफा, शीशा, मेज प्रमुख हैं। काष्ठ मूर्तियों में भगवान राम तथा बौद्ध तान्त्रिक देवी की मूर्ति देखी जा सकती है। वस्त्रों में पश्चिम बंगाल की सुप्रसिद्ध बालूचरी साड़ी, पंजाब की फुलकारी की चादर, असम की अलंकृत चादर, शॉल तथा सोने की जरी से निर्मित लहंगा महत्वपूर्ण संग्रह है। साज-सज्जा संग्रह में चीन का ड्रैगन लैम्प, फारस का हुक्का, जापान की सतसुमा केतली और सतसुमा पात्र, पीलीभीत की मस्जिद के चित्र तथा जंगल मे शिकार के दृश्य से युक्त हालैंड में बनी पोर्सेलिन की तश्तरी, तथा विषपात्र विशेष उल्लेखनीय हैं। ये प्रर्दश दर्शकों के मन में कौतुहल भी उत्पन्न करते हैं। चीनी मिट्टी से निर्मित बहुमुल्य कलाकृतियों में फूलदान, सुराही, फर्शी तथा कटोरे हैं जिन्हें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा भेंट स्वरूप प्रदान किया गया है। बहुमूल्य हाथी दाँत से निर्मित मुगल सम्राट अकबर, दर्पण देखते हुए जापानी राजकुमारी उमा की मूर्ति, भगवान बुद्ध, देवी काली, दत्तात्रेय, गणेश, कार्तिकेय तथा हाथी दाँत पर अंकित मुगल बादशाहों तथा उनके बेगमों के चित्र इस संग्रह के प्रमुख आकर्षण है। 14 वीं सदी में बहमनी सुल्तानों के शासन के दौरान विकसित कर्नाटक के बीदर शहर के सुप्रसिद्ध धातु हस्तकला के नमूनों के रुप में बीदरी पात्र भी साज-सज्जा संग्रह में देखे जा सकते हैं।

The Decorative collection of the Allahabad Museum is mainly a collection of wood, textiles and various types of utensils. Saharanpur's wooden curtain, table, drawer, box, sofa, mirror, table made of black wood from Bombay are prominent among the wooden items. Among the wooden idols one can see the idol of Lord Rama and the goddess of antra.

In textiles, the famous Baluchari saree from West Bengal, Phulkari bedsheet from Punjab, decorative bedsheet and shawl from Assam and lehenga made of gold zari are important collections. Another notable decorative art collections are Dragon Lamp from China, Hookah from Persia, Satsuma Kettle and Satsuma Vessel from Japan, and the porcelain saucer made in Holland depicting the pictures of Pilibhit's mosque, the scene of hunting in the forest, and the poison pot. Among the precious artifacts made of porcelain are vases, jugs, hukkabase/ floorboard of Hukka and bowls, which have been gifted by the Government of Uttar Pradesh.

हाथी दाँत से निर्मित स्कन्द
Skand made up of ivory

सतसुमा केतली
Satsuma Kettle

ड्रैगन की डिज़ाइन से युक्त गुलदान
Vase having design of Dragon

बैज
Badge

नेहरू संग्रह
NEHRU COLLECTION

इलाहाबाद संग्रहालय के नेहरु संग्रह में संग्रहीत वस्तुओं को स्वयं भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इलाहाबाद संग्रहालय को भेंट स्वरुप प्रदान किया था। इस संग्रह में नेहरू जी को देश विदेश से प्राप्त विशेष भेंट सामग्री, अभिनन्दन पत्र तथा भारत के स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण पत्र उल्लेखनीय हैं।

इस संग्रह की कुछ अन्य महत्वपूर्ण वस्तुओं में नेहरू जी के फारसी भाषा में लिखे शादी के निमंत्रण पत्र तथा उनकी विवाह में हुए व्यय के ब्यौरे वाली कॉपी प्रमुख है। नेहरू संग्रह का एक अन्य महत्वपूर्ण आकर्षण चंदन की लकड़ी से बना रथ है जिसके ऊपर भगवान श्रीकृष्ण तथा अर्जुन की हाथीदांत से निर्मित सुंदर मूर्तियां अवस्थित हैं।

नेहरू संग्रह की कतिपय अन्य भेंट स्वरूप प्राप्त वस्तुओं में बर्मा से प्राप्त लाख निर्मित मंजूषा, चित्तौड़गढ़ के किले में स्थित विजय स्तंभ की लघु प्रतिकृति, भीलवाड़ा से भेंट स्वरूप प्राप्त आनंद भवन की प्रतिकृति, नैनी जेल की प्रतिकृति, भाखड़ा नांगल तथा कोसी नदी पर निर्मित बांध की प्रतिकृति महत्वपूर्ण हैं। नेहरू जी की आत्मकथा के दो भाग तथा स्वराज पार्टी के खाता रजिस्टर को नेहरू संग्रह के महत्वपूर्ण वस्तुएं हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त बर्मा, श्रीलंका, इण्डोनेशिया, सिंगापुर तथा मलेशिया आदि विविध देशों से प्राप्त अभिनन्दन पत्र तथा चांदी एवं चन्दन से निर्मित मंजूषा नेहरू संग्रह की महत्त्वपूर्ण वस्तुएं हैं। नेहरू जी के बाल्यकाल से लेकर उनकी युवावस्था से संबंधित फोटो चित्र जिनसे उनकी जीवनयात्रा के विषय में जानकारी मिलती है, भी नेहरू संग्रह के महत्वपूर्ण संग्रहों में से एक हैं।

ताड पत्र पाण्डुलिपि
Plam leaf Manuscript

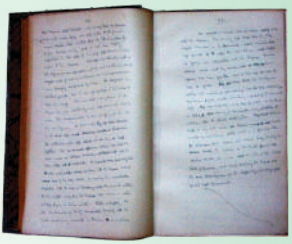

पं. जवाहर लाल नेहरू की आत्मकथा
Autobiography of Pt. Javahar Lal Nehru

The objects in the Nehru Collection of the Allahabad Museum were gifted to the Allahabad Museum by the first Prime Minister of India, Pt. Jawaharlal Nehru himself. In this collection, special gift materials received by Pt Nehru ji from India and abroad, greeting letters and some important letters related to India's Freedom Struggle are noteworthy.

Some other important objects of this collection include Nehru's wedding invitation cards/letters written in Persian language and a copy containing the details of the expenditure incurred in his marriage. Another important attraction of the Nehru Collection is the Sandalwood Chariot with beautiful ivory icons of Lord Krishna and Arjuna on its top.

चन्दन की लकड़ी का रथ
Sandalwood Chariot

Some of the other objects received as gifts of the Nehru Collection include a lacquered casket from Burma, a replica of Anand Bhawan received from Bhilwara, a replica of Naini Jail, replica of the Dam built on Bhakra Nangal and Kosi River are important. Two volumes of Nehru ji's autobiography and the account register of the Swaraj party are important objects of the Nehru collection.

In addition to the above, greeting letters received from various countries like Burma, Sri Lanka, Indonesia, Singapore, Malaysia and caskets made from Silver and Sandalwood are important objects of collection. Photographs related to Nehru ji from his childhood to his youth, which provide information about his life journey are also one of the important collections of the Nehru Collection.

लघुचित्र संग्रह

MINIATURE PAINTINGS COLLECTION

The miniature gallery, based on the miniature collection of the Allahabad Museum, contain the paintings from the 18th and 19th centuries, On the basis of style, these are as under:-

1. Rajput or Rajasthani Style: In this style, pictures of the personal and public life of Rajput kings and queens, wildlife, hunting, court, seraglio as well as pictures of celebrations made by Bundi, Kota, Kishangarh, Marwar and central Indian Malwa painters defines the lifestyle, valor, environment and tradition of the time.
2. Mughal style: It typically includes paintings of Mughal emperors and begums as well as their personal hobbies, Mughalian dress, court culture and splendor. Apart from these, these paintings can also be seen from the point of view of the beauty of Mughal art, architecture, carving and mosaic.
3. Pahari style: Although the urge to cherish the Indian cultural and classical tradition can be seen in almost all Indian miniature paintings, but these Pahari painters and their patrons scattered in different centers like Pahari, Basauli and Kangra made a commendable effort to preserve Indian tradition and culture in comparison to their personal identity.
4. Company style: Paintings of this style mainly depict the business and social activities of the East India Company.

इलाहाबाद संग्रहालय के लघुचित्र संग्रह में 18वीं से 19वीं शती के चित्र संग्रहीत हैं तथा इस संग्रह के प्रतिनिधि चित्र लघुचित्र वीथिका में प्रदर्शित किये गये हैं, जो शैलियों के आधार पर अधोलिखित हैं :-

1. राजपूत अथवा राजस्थानी शैली: इसमें बूंदी, कोटा, किशनगढ़, मारवाड़ तथा मध्यभारतीय मालवा चित्रकारों द्वारा निर्मित राजपूत राजा तथा रानियों के वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन, वन्य जीवन, शिकार, दरबार, अन्तःपुर के साथ ही उत्सवों के आयोजन के चित्र व तत्कालीन जीवन शैली, पराक्रम, परिवेश और परम्परा को पारिभाषित करतें हैं।

2. मुग़ल शैली : इसमें खासतौर से मुग़ल बादशाहों और बेगमों के चित्रों के साथ ही उनके मुगलिया शौक, लिबास, दरबारी तहज़ीब और शान-ओ-शौक़त शामिल हैं। इसके अलावा मुगल कला व स्थापत्य, नक्काशी व पच्चीकारी की खूबसूरती के नजरिये से भी इन चित्रों को देखा जा सकता है

3. पहाड़ी शैली : यद्यपि भारतीय संस्कृति एवं शास्त्रीय परम्परा को संजोने का आग्रह लगभग सभी भारतीय लघुचित्र शैलियों में देखा जा सकता है किन्तु पहाड़ी, बसौली और कांगड़ा जैसे विभिन्न केन्द्रों में बिखरे इन पहाड़ी कलमकारों और इनके संरक्षकों ने अपनी निजता की तुलना में भारतीय परम्परा और संस्कृति के संरक्षकों का स्तुत्य प्रयास किया।

4. कम्पनी शैली: इस शैली के चित्रों में मुख्यतः ईस्ट इण्डिया कम्पनी कालीन व्यापारिक और सामाजिक गतिविधियों के चित्र उल्लेखनीय हैं।

हाथियों पर नियन्त्रण
Controlling of Elephants

मूर्तिकला
SCULPTURE

बुद्ध शीर्ष
Head of Buddha

इलाहाबाद संग्रहालय के प्राचीन मूर्तिकला संग्रह में लगभग तीसरी शताब्दी ई.पू. से लगभग पांचवीं - छठवीं शताब्दी ई. के इतिहास से संबंधित कलाकृतियाँ संग्रहीत हैं। इस संग्रह में मुख्यतः मौर्य, शुंग, कुषाण तथा गुप्तकाल से संबंधित कलाकृतियां सुरक्षित हैं जिनमें मौर्यकालीन स्तंभ शौर्ष, स्तंभ योष्ट, शुंगकालीन भरहुत स्तूप के स्तूप खण्ड प्रमुख हैं।

इनके अतिरिक्त गांधार तथा मथुरा कला, जो कि कुषाण कला की प्रतिनिधि शैलियां हैं, में निर्मित बुद्ध शीर्ष विशेष आकर्षण के केन्द्र हैं। इनके अतिरिक्त गुप्तकालीन शैव, शाक्त एवं भूमरा के मंदिरों के कलात्मक फलक भी इस संग्रह की अन्य महत्वपूर्ण कलाकृतियाँ हैं।

पूर्व मध्यकालीन मूर्ति संकलन में चंदेल, प्रतिहार एवं पाल राजवंशों के संरक्षण में निर्मित हिंदू, बौद्ध एवं जैन तीनों ही धर्मों की कलाकृतियां मुख्य हैं जिनका समय लगभग 7 वीं से 11वीं शताब्दी ईस्वी है। इस संग्रह की कतिपय विशिष्ट मूर्तियों में उमा - माहेश्वर, लक्ष्मीनारायण, दशावतार से संबंधित मूर्तियां, सूर्य की मूर्तियाँ, सप्तमातृकाएं, स्तम्भ शीर्ष, द्वार स्तम्भ तथा नृत्यरत नायिकाएं प्रमुख हैं।

In the ancient sculpture collection of Allahabad Museum, artifacts related to the history of circa 3rd century BC to 5th – 6th century AD are stored. Artifacts related to Maurya, Shunga, Kushan and Gupta period are mainly preserved in this collection, in which Maurya period pillar top, pillar Yashti,stupa block of Shunga period Bharhut Stupa are prominent.

Apart from these, the Buddha head made in Gandhara and Mathura art,which are the representative styles of Kushan art, are the center of special attraction. Apart from these, the artistic panels of the temples of Gupta period Shiva, Shakta and Bhumra are also other important artifacts of this collection.

In the early medieval sculpture collection, the artworks of all the three religions, Hindu, Buddhist and Jain, were created under the patronage of Chandela, Pratihara and Pala dynasties, whose time is around 7th to 11th century AD. Some of the special sculptures of this collection are Uma- Maheshwar, Lakshminarayan, idols related to Dashavatara and Surya, Saptamatrikas, Pillar capital, Doorjambs and Dancing Damsels.

बोधिसत्व मैत्रेय
Bodhisattva Maitreya

नरसिंह अवतार
Incarnation of Narsingh

अस्त्र-शस्त्र संग्रह

ARM & ARMOUR COLLECTION

बहु नली पिस्तौल
Multi Barrel Pistol

इलाहाबाद संग्रहालय में अस्त्र-शस्त्रों का एक समृद्ध संग्रह है, जिनमें कुछ प्रमुख अस्त्र-शस्त्र संग्रहालय की अस्त्र-शस्त्र वीथिका में नियमित प्रदर्शन का अंग हैं, शेष अस्त्र-शस्त्र सुरक्षित संग्रह में रखे गये हैं। ये अस्त्र-शस्त्र लगभग 17वीं से 20वीं शताब्दी के हैं। इनमे से कुछ हथियार प्रयागराज के पुराने माण्डा रियासत द्वारा प्रदत्त है। इस संग्रह में आक्रामक तथा रक्षात्मक दो श्रेणियों के हथियार हैं। आक्रामक हथियारों में तलवार, भाला, परशु, खंजर, विविध प्रकार के बंदूकें यथा डेरिंगर पिस्तौल, मल्टीबैरल पिस्तौल, ड्यूलिंग पिस्तौल, फ्लिण्ट लॉक पिस्तौल, सिंगल बैरल पिस्तौल, ब्लेण्डर बस गन तथा मशीन गन मुख्य है।

रक्षात्मक हथियारों में विविध प्रकार के सुरक्षा कवच, ढाल तथा लौहशिरस्त्राण प्रमुख हैं। चालुक्य राजकुमारी अक्का देवी के वंशजों द्वारा भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को प्रदत्त तलवार भी इस संग्रह का मुख्य आकर्षण है

The Allahabad Museum has a rich collection of arms and weapons, some of which are part of the regular display in the arms gallery of the museum. The rest of the weapons are kept in reserve collection. These weapons are from around 17th to 20th century. Some of these weapons are gifted by the old Manda state of Prayagraj. There are two types of weapons in this collection, offensive and defensive. In offensive weapons, sword, spear, poleaxe, dagger, various types of guns like derringer pistol, multi barrel pistol, dueling pistol, flintlock pistol, single barrel pistol, blender bus gun and machine gun are the main ones.

Various types of protective shields and iron helmets are prominent in defensive weapons. The main attraction of the collection is the sword presented by the descendants of Chalukya princess Akka Devi to Mrs. Indira Gandhi, the first woman Prime Minister of India.

ख़ंजर
Dagger

कवच
Armour

चालुक्य रानी अक्का देवी की तलवार
Sword of Chalukya Queen Akka Devi

पुरातात्विक संग्रह ARCHAEOLOGICAL COLLECTION & BEADS

नवपाषाण कालीन पत्थर के उपकरण
Neolithic Stone Implements

इलाहाबाद संग्रहालय के पुरातात्विक संग्रह मे मध्य प्रदेश के सीधी जिले के सोन नदी घाटी से प्राप्त जंगली भैंसे/गौर का सिर (लगभग 1 से 1.5 लाख वर्ष प्राचीन) तथा विशालकाय हाथी के जबड़े (लगभग 30 से 50 हजार वर्ष प्राचीन) का जीवाश्म प्राचीनतम् प्रदर्शित पुरा सामग्रियां हैं। उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद, मिर्जापुर, बाँदा, हमीरपुर, ललितपुर तथा झाँसी जिलों के पुरास्थलों के सर्वेक्षण से प्राप्त नव पाषण कालीन प्रस्तर उपकरणों को इस संग्रह में देखा जा सकता है। इनके अतिरिक्त गुहा शैल चित्रों में इलाहाबाद, राबर्ट्सगंज तथा भैंसोर स्थित गुफाओं में पाये जाने वाले शैल चित्र भी इस संग्रह के प्रमुख आर्कषण हैं। सैंधव सभ्यता के प्रमुख स्थल मोहनजोदड़ो से प्राप्त चित्रित तथा छिद्रित मृदभांडो के टुकड़े, मानव एवं पशु मृण्मूर्तियां, वलय, मनके, शंक्वाकार तथा चौकोर वस्तुयें, चूड़ियाँ, बाटमाप, तथा चर्ट ब्लेड्स इस संग्रह की महत्वपूर्ण वस्तुयें हैं, जो हड़प्पा या सिंधु सभ्यता का प्रतिनिधित्व करती हैं। ताम्रपाषाण कालीन वस्तुयें भी पुरातात्विक संग्रह में देखी जा सकती हैं जिनमें उत्तर प्रदेश के बदांयू से प्राप्त ताम्र निर्मित मानवाकृति एवं कानपुर के निकट स्थित बिठूर से प्राप्त ताम्र उपकरण महत्वपूर्ण प्रदर्श हैं। पुरातात्विक संग्रह का एक अभिन्न अंग चर्ट, जैस्पर, कार्नेलियन, अगेट, क्रिस्टल आदि अर्धमूल्यवान पत्थरों पर निर्मित मनके भी हैं। पशु-पक्षियों की विविध आकृतियों में निर्मित ये मनके कलाशिल्पियों की दक्षता का प्रमाण देते हैं। इनमें से अधिकांश मनके कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश से प्राप्त हैं

In the Archaeological collection of the Allahabad Museum, the head of a wild buffalo/Gaur/Bison (about 1 to 1.5 million years old) and the Jaw of a giant elephant (about 30 to 50 thousand years old) found in the Son river valley of Sidhi district of Madhya Pradesh are the oldest displayed.

Neolithic stone tools obtained from the exploration of the archaeological sites in Allahabad, Mirzapur, Banda, Hamirpur, Lalitpur and Jhansi districts of Uttar Pradesh can be seen in this collection.

Apart from these, cave rock paintings found in caves located at Allahabad, Robertsganj and Bhainsore are also major attractions of this collection. Fragments of painted and perforated pottery, human and animal terracotta figurines, rings, beads, conical and square objects, bangles, wait and measures and chert blades recovered from Mohenjodaro, the main site of the Indus civilization, are important objects of this collection, which represent the Harappan or indus civilization.

Chalcolithic objects can also be seen in the archaeological collection, in which copper-made anthropomorphic figure obtained from Badayun and copper tools obtained from Bithoor near Kanpur, Uttar Pradesh are important exhibits. Beads made on semi-precious stones like chert, jasper, carnelian, agate, crystal etc. are an integral part of the Archaeological collection. These beads made in various shapes of animals and birds testify to the efficiency of the artisans. Most of these beads are obtained from Kaushambi, Uttar Pradesh.

मनके
Beads

मानवरुपी आकृति
Anthropomorphic figure

मुहरें **Seal & sealings**

इलाहाबाद संग्रहालय

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

Allahabad Museum

(Ministry of Culture, Government of India)

Chandrashekhar Azad Park,
Kamala Nehru Road, Prayagraj - 211002
E-mail: allahabadmuseum@rediffmail.com
allahabadmuseum.admn@gmail.com
allahabadmuseumeducation@gmail.com
website : www.theallahabadmuseum.com
Twitter / @allahabadmuseum
Facebook / @allahabadmuseum
Instagram / @allahabadmuseum
Tel: 0532-2408237, 2407409, 2408690